Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5334961

Roll No. 23263005400
Total Mark 55/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010301T - HINDI GADYA

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	9/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	10/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 19/12/2024 Shift: II Room No.: 27
Paper Code: A010301T Subject: Hindi Gadya ✓ Year/Sem.: 3rd
Name of Candidate: Aditi Mishra
Roll No.: 2 3 2 6 3 0 0 5 4 0 0

Signature of Candidate: Aditi Mishra
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A010301T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: BA Language
Session: 2024-25 Year/Semester: 3rd
Subject Name: Hindi Gadya
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code
A 0 1 0 3 0 1 T

Exam Date
1 9 1 2 2 0 2 4

Name of Candidate
ADITI MISHRA

Father's Name
AJAY K. MISHRA

महाविद्यालय का कोड
College Code
K N 0 4

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code
K N 0 4

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
5334961

A010301T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 2 1 8 1 5

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 3 2 6 3 0 0 5 4 0 0

पेपर कोड Paper Code
A 0 1 0 3 0 1 T

Aditi Mishra
Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. कॉलम में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ●

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती हैं। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैलकुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में करेंसी न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

≠ ≠ ≠

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसको होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त शाक नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before t commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in s as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

खण्ड - स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर → 9 'गिल्लू' एक संस्मरण है जो 'महादेवी वर्मा' द्वारा लिखा गया है।
गिल्लू एक गिलहरी का छोटा सा बच्चा था जो लेखिका को स्वयं से भी अधिक प्रिय था। उसने लेखिका के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया था।

एक बार लेखिका घर के बरामदे में जब गईं तब उन्होंने कि देखा कि दो कौवे मामले के पीछे बार-बार चोंच मार रहे हैं तथा हट रहे हैं। उनकी यह प्रक्रिया काफी देर चली।
आखिर लेखिका ने जा कर देखा तो उन्हें एक गिलहरी का छोटा-सा बच्चा दिखा जो डरा-सहमा बैठा था।
कौवे की चोंच से उसकी पीठ पर घाव के निशान हो गए थे तथा उससे खून बह रहा था।
उस जीव के प्रति लेखिका को दया आ गई।
अतः गिल्लू लेखिका को घायल व चोटिल परिस्थितियों में मिला।

लेखिका ने गिल्लू को उठाया और कमरे में ले जाकर मरहम-पट्टी कर दी। गिल्लू दो-तीन दिनों में पूर्णतया ठीक हो गया।
ठीक होने के बाद वह शरारती हो गया था।

Do Not Write anything in this Portion

लेखिका ने खिड़की के ऊपर फूल की डलिया में रूई भरकर उसके लिए झूला बनाकर टाँग दिया।

इसके अतिरिक्त उन्होंने गिल्लू के आने-जाने के लिए खिड़की का एक जाल खोल दिया। गिल्लू आराम से झूले में रहता तथा अंदर बाहर करता।

गिल्लू को खाने में काजू अत्यधिक पसंद थे। अगर उसे काजू न मिलते तो वह दूसरे खाने की चीजें फेंककर विरोध करता था।

विरोध → लेखिका को गिल्लू की याद सोनजूही के पौधे में छोटे-छोटे पीले फूलों को देखकर आई क्योंकि जब गिल्लू ने २ वर्ष का समय पूरा करके जीवन की अन्तिम साँस ली तब लेखिका ने उसे इसी पौधे के नीचे दबा दिया था।
इसके अतिरिक्त गिल्लू को सोनजूही के पौधे की पीढ़ि छिपकर खेलना पसन्द था।
जब लेखिका गिल्लू को याद करती हैं तो वह भावविहोर हो जाती हैं।

गिल्लू जैसा जीव उनको अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यारा था।
उन्होंने गिल्लू के साथ गहरा संबंध स्थापित कर लिया था।

गिल्लू के हृदय में भी लेखिका के लिए उतना ही प्रेम था जितना लेखिका के हृदय में था।
इसका उदाहरण देखने को मिलता है लेखिका के जीवन के एक प्रसङ्ग से :—

एक बार जब लेखिका का वाहन दुर्घटना में एक्सीडेंट हो गया था तो उन्हें तीन - चार दिन अस्पताल में रहना पड़ा।
उनकी अनुपस्थिति में जो भी जाता गिल्लू को काजू, बिस्किट देकर आता।
परन्तु जब लेखिका घर आई तो उन्होंने देखा गिल्लू ने बहुत कम काजू खाए था।
अधिकतर काजू उसके झूले में मिले।

अतः उसने लेखिका की याद में अपना मनपसंद भोजन भी नहीं किया।
गिल्लू अपने नन्हें - नन्हें पंजो से लेखिका का हाथ पकड़ने की कोशिश करता था।
वह इतना शरारती था कि पकड़ में नहीं आता था।
जब लेखिका साहित्य रचना करतीं तो वह पास आकर बैठ जाता था और उन्हें परेशान करता था।

गिल्लू के देहांत ने लेखिका के जीवन में गहरा तथा विशेष प्रभाव छोड़ा।
उसने अपने जीवन की अन्तिम घड़ी लेखिका के साथ बिताई। उसने लेखिका के हृदय में स्थान को सदैव के लिए अंकित कर लिया।

Do Not Write anything in this Portion

गिल्लू ने लेखिका को भेंट स्वरूप वह यादें दे दीं जो कभी भूली नहीं जा सकती।

लेखिका कहती हैं कि :-

" गिल्लू के देहांत के बाद भी सोनजूही के उस पौधे पर बसंत आता है अतः छोटे, सुन्दर, पीले फूल खिलते हैं।

इसके अतिरिक्त गिल्लू के इतनी अन्य गिलहरियाँ खिड़की के बाहर आकर आवाज निकालती हैं।

बस जो बदला है वह है गिल्लू का न होना। गिल्लू की स्मृति में लेखिका भावुक हो जाती हैं।

गिल्लू के प्रति उनका कितना गहरा लगाव व प्रेम था इसके विषय में हमें इस माराश के हर एक शब्द से पता चलता है।

गिल्लू की स्मृतियों में डूबी हुई महादेवी वर्मा अपने संस्मरण का अंत करती हैं तथा इसके प्रति लगाव को अपने हृदय रूपी तिजोरी में बंद करके सदैव के लिए रख लेती हैं।

एक जीव पशु और मानव के प्रेम का सिक्का इस संस्मरण में सूक्ष्मता तथा सुंदरता से किया गया है।

खण्ड - 'ब'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न →

उत्तर → 2

'झाँसी की रानी' उपन्यास 'वृन्दावनलाल वर्मा' ने लिखा है। यह एक प्रसिद्ध उपन्यास है जिसका आधार ऐतिहासिक है। हालाँकि इसमें ऐतिहास के साथ-साथ कल्पना का भी समावेश है जैसे ऐतिहासिक पात्र → रानी लक्ष्मीबाई, गंगाधर राव, जनरल रोज़ & तथा अंग्रेजी सेना, मुन्दर, मुन्दर, काशी (रानी की सहेलियाँ), ताँत्या टोपे।

उपन्यास का सारांश

इस उपन्यास की नायिका 'झाँसी की रानी' महारानी लक्ष्मीबाई हैं जिन्होंने भारत देश की स्वाधीनता तथा अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिए युद्ध किया तथा 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन का बलिदान दे दिया। वह (मोरोपंत) की पुत्री थीं।

रानी लक्ष्मीबाई का उत्तम चरित्र है —

रानी लक्ष्मीबाई एक साहसी, शौर्य व सुन्दरता से युक्त, कर्तव्यनिष्ठ, पराक्रमी, त्यागी, आत्मबल से परिपूर्ण, धार्मिक, प्रजापालक, न्यायप्रेमी, देशप्रेमी तथा धर्मप्रेमी थीं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 1 0 3 0 1 T

रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजो के प्रति उत्तम कूटनीति बनाकर उन्हें धूल चटा दी।

रानी लक्ष्मीबाई में स्त्री की भाँति कला और संस्कृति के प्रति अनुराग तो था पर समय की स्थिति देखकर उन्होंने युद्ध के लिए तलवार उठा ली।

रानी लक्ष्मीबाई के पति गंगाधर राव पुरानी मान्यताओं का अनुसरण करते थे इसलिए उन्हें घुड़सवारी, तलवारबाजी, कुश्ती महल के अंदर ही सीखनी पड़ी।

रानी लक्ष्मीबाई ने जनरल रोज जैसे कठोर, पराक्रमी, साहसी, निडर तथा वीर अंग्रेजी सेनापति का सामना निडरता तथा बहादुरी से किया।

रानी लक्ष्मीबाई क्रांति की समर्थिका थीं। वह अत्याचार सहना और करना दोनों को गलत मानती थीं।
उन्होंने 'चाणक्य नीति' को अपनाकर युद्ध किया था।

18 वर्ष की में विधवा हो जाने के बाद और अपनी संतान को खो देने के बाद भी उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य नहीं बदला तथा पराक्रम के साथ लड़ती रहीं। उनमें स्त्री जैसी सुन्दरता, कोमलता व निपुणता

Paper Code A01 030-1T

थी तो पुरुष की भाँति पराक्रम तथा आत्मसम्मित थी।

वह एक योद्धा थीं परन्तु उनके ह्रदय में मातृत्व का भाव था।
मातृत्व का भाव न सिर्फ आम जनता के लिए था अपितु अंग्रेजों के प्रति भी था।

उनके मातृत्व का भाव एक प्रसंग के माध्यम से दिखाई पड़ता है -

एक बार जब झाँसी की रानी की सेना ने अंग्रेजो के किले चारों तरफ से घेर लिए तब रानी ने अंग्रेजों के परिवार के लिए खाने - पानी की व्यवस्था की।
इससे पता चलता है कि उनकी ~~बुराई~~ दुश्मनी अंग्रेजों की बुराई से थी न कि अंग्रेजों से।
उन्होंने अपनी प्रजा का ध्यान माँ की भाँति रखा।
वह ऊँच - नीच मे भेदभाव नहीं करती थीं।
वह सभी जाति के लोगों से मिलकर उन्हें स्वतंत्रता क्रांति में सहयोग देने के लिए प्रेरित करती थी।
उनके अंदर आभूषणों का मोह नहीं था। उन्होंने सेना की सामग्री जुटाने के लिए अपने आभूषण बेच दिए।
वह चाहती थी कि आजादी के लिए स्त्री - पुरुष साथ में आएँ तभी आजादी मिल सकती है।
इस उपन्यास में झाँसी की रानी के बारे में बताया गया है।

Paper Code A 0 1 0 3 0 1 T

Do Not Write anything in this Portion

जहाँ एक ओर झाँसी की रानी का साथ तात्या टोपे जैसे वीर योद्धा ने दिया वहीं दूसरी तरफ किले के ही कुछ लोग देशद्रोही कर रहे थे।

पीर अली ने महल के राज़ अंग्रेजो को बता दिए थे।
रानी लक्ष्मीबाई के बारे में पढ़कर लगता है उन्होंने हमें तथा देश को स्वतंत्र कराने में अत्यधिक संघर्ष किया।
अपने प्राण को समर्पित कर दिया इस देश की स्वाधीनता के लिए।
उन्होंने एक सपना देखा था स्वाधीनता का उन जैसी वीर [illegible] से हमारे देश का इतिहास गौरव[illegible] है।

रानी लक्ष्मीबाई की साहस, वीरता को युगों युगों तक याद किया जाएगा।
उन्होंने यह बताया कि एक स्त्री के अंदर यदि सौम्यता, सरलता, मातृत्व, सहजता, निपुणता, कोमलता होनी चाहिए तो समय आने पर उसे अपने तथा दूसरे के ऊपर अत्याचार के खिलाफ कर तलवार भी उठानी चाहिए - तात्पर्य है कि उसका विरोध पूरी निडरता से करना चाहिए।
उन्होंने हमारे देश के लिए लड़कर बलिदान दे दिया जिससे यह साबित होता है कि 'देशप्रेम - राष्ट्रीयता व स्वाधीनता' उनके लिए कितनी महत्वपूर्ण थी।

Paper Code A 0 1 0 3 0 1 T

खण्ड - 'अ' लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर (i)

गद्य साहित्य → गद्य वह साहित्यिक रचना है जिसमें छंद, लय, ताल, तुकबंदी न होकर वाक्यों का प्रयोग करके सरल भाषा में किसी बात को समझाया जाता है।

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' ने 19 वीं शताब्दी के आरम्भ को गद्यकाल कहा है क्योंकि इस काल में जो साहित्यिक रचनाएँ की गई वे गद्य पर आधारित थीं। इससे पहले काव्य की प्रधानता हिन्दी साहित्य में थी।

'राजस्थानी' और 'ब्रजभाषा' में पहले गद्य मिलते हैं—

गद्य की कुछ विधाएँ →

1) कहानी
2) निबन्ध
3) संस्मरण
4) आत्मकथा
5) जीवनी
6) यात्रावृत्तांत
7) रेखाचित्र
8) व्यंग्य
9) नाटक
10) उपन्यास

गद्य साहित्य का विकास निम्न क्रम में हुआ —

① भारतेन्दु युग → भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बाल कृष्ण भट्ट
② द्विवेदी युग → प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, महावीर प्रसाद द्विवेदी
③ शुक्ल युग → आचार्य शुक्ल, श्याम सुन्दर दास
④ शुक्लोत्तर युग → हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नागेन्द्र

'खड़ी बोली' गद्य साहित्य के लिए "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र" हैं।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर (ii)

हिन्दी गद्य साहित्य की नवीन विधाओं का उल्लेख→

• रेखाचित्र → रेखाचित्र वह गद्य विधा है जिसमें लेखक किसी वस्तु, व्यक्ति तथा घटना का वर्णन इतनी सूक्ष्मता से करता है कि उसका सजीव चित्र मानव मस्तिष्क में उत्पन्न हो जाए।

• आत्मकथा → आत्मकथा वह गद्य विधा है जिसमें लेखक अपने जीवन की विशेष घटनाओं के क्रम को साहित्यिक रूप प्रदान करता है।

• जीवनी → जीवनी किसी महापुरुष के जीवन की विशेष घटनाओं को साहित्यिक रूप देकर लिखा जाने वाला आलेख है।

• यात्रा वृतांत → यात्रा वृत्तांत वह गद्य-विधा है जिसमें लेखक किसी स्थान में यात्रा करने के दौरान उस स्थान की भौगोलिक स्थिति, परिवेश, रहन-सहन, खान-पान के साथ अपने अनुभवों व अनुभूतियों का वर्णन करता है।

• संस्मरण → लेखक के हृदय में अंकित किसी विशेष वस्तु, व्यक्ति, घटना की याद में लिखा जाने वाला आलेख संस्मरण कहलाता है।
इसमें लेखक की संवेदनाएँ, सहानुभूतियाँ, यादें, भावनाएँ होती है।

उत्तर (iii)

आत्मकथा व जीवनी में अंतर –

आत्मकथा महत्वपूर्ण गद्य विधाओं में से एक है। यह वो गद्य - विधा है जिसमें लेखक स्वयं के जीवन की घटनाओं को स्वयं ही साहित्यिक रूप देकर लिखता है।
जीवनी किसी महापुरुष की लिखी जाती है। यह वो गद्य - विधा है जिसमें किसी महापुरूष के जीवन की विशेष घटनाओं को लेखक / अन्य व्यक्ति साहित्यिक रूप देकर लिखता है।

आत्मकथा में स्वयं के गुण - दोष, योग्यता, शिक्षा, उपलब्धि आदि का वर्णन होता है तथा जीवनी मे दूसरे के गुण - दोष, शैक्षिक योग्यता, उपलब्धि, जन्म / मरण आदि का वर्णन होता है।

आत्मकथा में लेखक कल्पना कर सकता है परन्तु जीवनी में उसे कल्पना का अधिकार नहीं, सिर्फ प्रमाणिकता होनी चाहिए।

आत्मकथा में लेखक स्वयं के विचार रख सकता है परन्तु जीवनी में उसे स्वयं के विचार रखने का अधिकार नहीं।

आत्मकथा खुद के जीवन का वर्णन है अपितु जीवनी किसी महापुरूष के जीवन गाथा का महाकाव्य है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 1 0 3 0 1 T

उत्तर (iv) कहानी वह गद्य-विधा है जिसमें जीवन की किसी एक घटना विशेष का सूक्ष्म रूप से वर्णन होता है।
** मुंशी प्रेमचन्द्र को (कहानी का सम्राट) कहते हैं
→ किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा रचित [इंदुमती] को प्रथम कहानी अनेक विद्वान मानते हैं।

कहानी का उद्भव एंव विकास →

प्रेमचन्द्र पूर्व युग की कहानी	प्रेमचन्द्र + प्रसाद युग की कहानी	प्रेमचन्द्रोत्तर युग की कहानी	समकालीन कहानी

• प्रेमचन्द्र पूर्व युग की कहानी → वैसे तो मानव सभ्यता के विकास के साथ कहानी का विकास माना जाता है लेकिन 19वीं शताब्दी के आरम्भ में इसका विकास हुआ।

प्रमुख कहानी →

किशोरी लाल गोस्वामी → इंदुमती → 1900
भगवान दास → 'प्लेग की चुड़ैल → 1902

• प्रेमचन्द्र युग की कहानी → इस युग के प्रमुख कहानीकार प्रेमचन्द्र व जयशंकर

प्रसाद हुए। मुंशी प्रेमचन्द ने 300 से अधिक कहानियाँ लिखीं।

मुख्य कहानी -

- कफन
- दो बैलों की कथा
- नमक का दारोगा
- ईदगाह

• प्रेमचन्दोत्तर युग की कहानी

इस युग में अज्ञेय, यशपाल जैसे कहानीकार हुए जिन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा पर कहानी लिखी।

प्रमुख कहानियाँ

• धर्म पुत्र

• समकालीन कहानी

आजादी के बाद लिखी गई कहानियों को समकालीन कहानियाँ कहते हैं।
इसमें सामाजिक समस्या का वर्णन तथा राजनेताओं पर व्यंग्य देखने को मिलता है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर (V)

एकांकी व नाटक में अन्तर →

एकांकी	नाटक
1) एकांकी वह गद्य विधा है जिसमें कम-से कम पात्र होते हैं।	1) नाटक वह गद्य-विधा है जिसमें अधिक से अधिक पात्र होते हैं।
2) एकांकी में एक अंक होता है।	2) नाटक में अनेक अंक होते हैं।
3) एकांकी की समय सीमा कम है।	3) नाटक की समय सीमा अधिक होती है।
4) एकांकी के संवाद छोटे व सरल होते हैं।	4) नाटक के संवाद बड़े तथा सरल व कठिन हो सकते हैं।
5) एकांकी में पात्र चित्रण नहीं होता।	5) नाटक में पात्र चित्रण हो सकता है।
प्रमुख - एकांकीकार डॉ. रामकुमार शर्मा	प्रमुख - नाटककार जयशंकर प्रसाद

उत्तर (vi)

रेखाचित्र वह गद्य विधा है जिसमें लेखक किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना का इतना सूक्ष्मता से वर्णन करता है कि उसका सजीव चित्र हृदय में अंकित हो जाए।

रेखाचित्र में लेखक ऐसे शब्दों का चयन करता है जो मस्तिष्क में सजीव चित्र उत्पन्न कर दें।

वह कल्पना का सहारा अधिक से अधिक करता है।

रेखाचित्र को पढ़कर लगता है कि कोई वस्तु, व्यक्ति, घटना को हम अपने सामने देख रहे हैं।

रेखाचित्र नवीन गद्य - विधा है।

रेखाचित्र अंग्रेजी के शब्द 'स्केच' से आया है।

रेखाचित्र पाठकों के बीच लोकप्रिय है। यह आधुनिक युग की देन है।

रेखाचित्र का वर्णन प्रभावशाली ढंग से किया जाता है।
अनेक लेखकों ने इस गद्य - विधा का उपयोग करके पाठकों के मन में जगह बनाई है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर ~~(viii)~~ (vii)

वृन्दावनलाल शर्मा एक प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार व नाटककार हैं।
इनका जन्म ललितपुर, झाँसी में हुआ।
इनके पिता का नाम अयोध्या प्रसाद तथा गुरू का नाम विद्याधर दीक्षित था।

इनकी जन्म भूमि झाँसी तथा कर्म भूमि बुन्देलखण्ड थी।

इन्होंने अनेक रचनाएँ की —

① झाँसी की रानी
② महारानी दुर्गावती
③ माधवराव सिंधिया
④ अहिल्याबाई
⑤ कभी - न - कभी

वृन्दावनलाल शर्मा का व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली था।
उन्होंने अनेक रचनाएँ की जिनमें से झाँसी की रानी रचना सर्वश्रेष्ठ रही।

उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन साहित्यिक रचना कर के साहित्यिक जगत में अपना नाम कमाया —

जन्म → 9 जनवरी, 1889

मृत्यु → 23 फरवरी, ~~18~~ 1968

उत्तर ~~(viii)~~ (viii)

पंच परमेश्वर कहानी मुंशी प्रेमचन्द ने लिखी है।
इसका प्रकाशन 1916 में "सरस्वती पत्रिका" में हुआ था।
इसका नाम पंचायत से पंच परमेश्वर 'महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया था।

सारांश

दो मित्र थे - जुम्मन शेख और अलगु चौधरी।
दोनों में गहरी मित्रता थी। जुम्मन शेख का सम्मान विद्या के कारण तो अलगु चौधरी का सम्मान धन के कारण पूरे गाँव में होता था।
जुम्मन शेख ने जब अपनी खाला को पास रखकर उनकी मिलकियत अपने नाम करवा ली तथा खाला पर व्यंग्य - बाण चलाने लगा तो खाला ने पंचायत बुलाई। पंचायत का पंच अलगु चौधरी को बनाया गया जिसने खाला के पक्ष में निर्णय लेकर जुम्मन शेख से दुश्मनी ले ली।
एक बार जुम्मन शेख को दुश्मनी निकालने का मौका तब मिला जब अलगु चौधरी ने साहू के खिलाफ पंचायत बुलाई और वह पंच बना।
साहु पर अलगु चौधरी के बैल के पैसे न देने का इल्जाम था। जुम्मन शेख ने पंच की तरह निष्पक्ष फैसला अलगु चौधरी के पक्ष में सुनाया। उसे पता चला कि पंच के हृदय में स्वंय परमेश्वर का वास होता है वह न किसी का दोस्त होता है न दुश्मन।

भाषा → अंग्रेजी उर्दू के शब्द, खड़ी बोली
शैली → वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर (ix) परदा कहानी के लेखक 'यशपाल' है।

इस कहानी में उन्होंने स्त्रियों के बंधन की समस्या को उजागर किया है अर्थात् पुरानी परम्पराओं व मान्यताओं के चलते स्त्रियों को घूंघट में घर के अंदर रहना पड़ता है - पुरुष प्रधान समाज में। जिसके कारण उनका व्यक्तिगत विकास नहीं हो पाता। वे स्वयं को सुरक्षित तो महसूस करती है उसके साथ ही कैद भी।

दूसरी समस्या है कर्ज। कर्ज बहुत बुरी चीज है। एक बार जो व्यक्ति इसमें दब गया उससे बाहर निकलना असंभव हो जाता है।
चौधरी पीरबख्श का कर्ज न चुकाने पर इलाही बबर खाँ गुस्से से उसके घर की प्रतिष्ठा अर्थात 'परदे' पर डंडे से वार करता है जिसके कारण उसके घर की स्त्रियों की दयनीय स्थिति समाज में उजागर हो जाती है।

तीसरी समस्या है गरीबी → इस कहानी में लेखक ने गरीबी को मुख्य कारण माना है क्योंकि गरीबी के कारण इंसान कर्ज लेता है जिसे न चुकाने पर समाज में उसे यातनाएँ व कष्ट दिए जाते हैं और उसके अभावों को उजागर किया जाता है।

Paper Code

X

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion